ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्षः 13 अंकः 149 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक पत्रिका अक्टूबर 2020 30/-प्रति

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

''हमारे शास्त्रों के अनुसार जब तक मनुष्य की कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में नहीं पहुँचती, मोक्ष नहीं होता। पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय होने का नाम ही 'मोक्ष' है, कैवल्यपद की प्राप्ति है। सिद्धयोग अर्थात् महायोग में शक्तिपात दीक्षा द्वारा गुरु अपनी शक्ति से शिष्य की कुण्डलिनी को जाग्रत करता है, और साधक को उस परमसत्ता से साक्षात्कार योग्य बनाता है।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष: 13 अंक: 149 हिन्दी-अंग्रेजी मासिक पत्रिका अक्टूबर 2020

वार्षिक: 300/- द्विवार्षिक: 600/- मूल्य 30/-

❖ संस्थापक एवं संरक्षक:
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

❖ सम्पादक:
रामूराम चौधरी

कार्यालय:
स्पिरिचुअल साइंस पत्रिका

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो. बॉक्स नं. - 41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com

Head Office
Spiritual Science Magazine:
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Post Box No. - 41
Near Hotel Lariya, Chopasani,
Jodhpur (Raj.) India - 342001

+91 291 2753699
+91 9784742595
E-mail:
spiritualscienceavsk@gmail.com
Website:
www.the-comforter.org

अनुक्रम

प्रार्थना.....4

मेरे गुरुदेव ! (सम्पादकीय) 5-6

भव का भार सद्गुरु पर.....7

साधना विषयक बातें 8-9

गुरुदेव का प्रवचन (22 मई 2003).....10

रूपान्तरण (Transformation) 11-12

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....13

महान् योगी 14

मानस की नीरवता 15

त्याग का प्रभाव (कहानी) 16-19

योग के आधार 20

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण 21

मंत्र 22

ध्यान की विधि 23

प्रार्थना

हे प्रभु ! तू अपनी ही अभिव्यक्ति का सर्वशक्तिमान स्वामी है। इन यंत्रों को वर दे कि वे बहुत संकरे चौखटों में से, बहुत कठोर और सामान्य सीमाओं में से बच निकलें। तेरी अनंत शक्ति के एक परमाणु को भी कार्य में परिणित करने के लिए मानव संभावनाओं की सारी समृद्धि की जरूरत होती है.....

बंद दरवाजों को खोल, अवरूद्ध फव्वारों को उछलने दे ताकि तेरी भावपूर्णता और तेरी सुंदरता की बाढ़ सारे जगत् में फैल जाए। वर दे कि प्राचुर्य और तेजस्विता, उदारता और मोहकता, कोमलता और महानता, विभिन्नता और बल फैल जाए क्योंकि प्रभु की व्यक्त होने की इच्छा है।

हे मेरे मधुर स्वामी, तू हमारी नियतियों का एकाधिराज है; तू अपनी निजी अभिव्यक्ति का सर्वशक्तिमान स्वामी है।

यह सारा जगत्, यह सब प्राणी और परमाणु तेरे हैं। उन्हें रूपान्तरित कर और प्रदीप्त कर। –श्री माँ

www.the-comforter.org

।। मेरे गुरुदेव ।।

तीन लोक नव खण्ड में, गुरु ते बड़ा न कोय।
करता करै न कर सकै, गुरु करे सो होय।।

सद्गुरु की महिमा अनंत है। दुनिया का आदि और अंत सब सद्गुरु में समाहित है। जब हृदय में 'गुरु' का भाव या विचार पैदा होता है तो पूरा शरीर पुलकित हो उठता है। रोम रोम खिल उठता है। ज्यों ज्यों गुरुदेव को मन में याद करते हैं तो भीतर की गहराइयों से असीम शांति की लहरें समुद्र रूपी शरीर के नदी रूपी नाड़ियों में संचारित होने लगती हैं। ऐसे परम दयालु ईश्वर के सगुण साकार रूप, सर्वव्यापक, सर्वसमर्थ सर्वघटवासी कल्कि अवतारी सद्गुरुदेव को बारम्बार नमन् करता हूँ।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने अपने 87वें अवतरण दिवस पर साधकों को 15 मिनट का ध्यान कराने के बाद आदेश दिया कि 'मेरे गुरुदेव की जय बोलो।'' साधकों से खचाखच भरा पण्डाल, बाबा श्री गंगाईनाथजी के गगनभेदी जयकारों से गूँज उठा। काफी देर तक गुरुदेव और दादा गुरुदेव के जयकारों से निकली कर्णप्रिय ध्वनि ने हृदय की गहराइयों को छू लिया। साक्षात् कल्कि भगवान् की अपने सद्गुरु के प्रति कितनी अपार श्रद्धा है, यह वहाँ उपस्थित हर साधक को महसूस हो रही थी।

अवतरण दिवस पर सद्गुरुदेव ने आशीर्वचन में ये कहा-'अब पन्द्रह मिनट ध्यान कर लो।' और 'मेरे गुरुदेव की जय बोलो।'

कार्यक्रम की शुरूआत में गुरुदेव के चरण प्रक्षालन करने के बाद तिलक, मौली और माल्यार्पण द्वारा पूजा-अर्चना की गई। पूजा-अर्चना के बाद संस्था द्वारा प्रकाशित 2013 का कलैण्डर सद्गुरुदेव ने अपने कर कमलों से विमोचित किया। उसके बाद कांकरोली (राजसमन्द) के एक साधक ने पीपल के पत्ते पर बनाए गए, बाबा श्री गंगाईनाथ जी के चित्र को, गुरुदेव को भेंट किया।

उसके बाद 15 मिनट ध्यान करने का आदेश देते ही विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ होने लगीं। ध्यान के बाद गुरुदेव ने अपने निवास के लिए प्रस्थान किया। फिर हजारों साधकों ने गुरुदेव व दादा गुरुदेव की तस्वीरों के आगे नमन् कर अपनी श्रद्धा अर्पण की।

उस दिन संपूर्ण आध्यात्मिकता का आलम छाया हुआ था।

अवतरण दिवस के बाद 1 दिसम्बर को दिल्ली के जन्तर मन्तर पर विश्व एड्स दिवस पर सिद्धयोग शिविर का आयोजन रखा गया। जिसमें भारत भर से कई साधकों ने भाग लिया। प्रिन्ट और इलैक्ट्रोनिक मीडिया वालों ने कवरेज किया। पचास से ज्यादा साधकों ने अपने अनुभव बताए जो रोंगटे खड़े करने वाले थे। मीडिया से मुखातिब साधकों के अनुभव विश्व विज्ञान के लिए चुनौती और शोध का विषय था।

वायुसेना में कार्यरत सत्यवान सिंह का अनुभव तो दिल दहलाने वाला था । उन्होंने ई टीवी, जी न्यूज, आजतक सहित सभी मीडिया की उपस्थिति में बताया कि मेरे नौ ऑपरेशन होने के बाद भी पथरी नहीं निकली। मेरे पेट में 18, 20, 22 एम एम की पथरी थी जिसके कारण बड़ा ही असहनीय दर्द होता था और इन गुरुदेव का नाम जप और ध्यान करने से पेशाब के साथ मेरी पथरी निकल गई। अब मैं बिलकुल स्वस्थ और तंदरुस्त हूँ।

पुखराज वाम्भु (बाड़मेर) ने कहा कि मेरे पेट का कैंसर ठीक हुआ। चौहटन (बाड़मेर) निवासी गंगाराम चौधरी ने कहा कि उनका एड्स ठीक हो गया।

डॉ. अरुण प्रधान, डॉ. योगेश (मसूरी), डॉ. प्रवीण सहित कई डॉक्टरों ने कहा कि गुरुदेव प्रदत मंत्र के जप और उनकी तस्वीर का ध्यान करने से सकारात्क और भौतिक रूप से परिवर्तन आ रहा है, बीमारियाँ ठीक हो रही हैं तथा नशे की लत छूट रही है।

गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान लगता है। लेकिन किसी भी मीडिया में सत्य की खबर नहीं छपी। फिर भी गुरुदेव से जुड़ा हर साधक अपने अपने स्तर पर, अपनी क्षमता अनुसार इस मिशन के प्रसार-प्रचार में लगा हुआ है। गुरुदेव की तस्वीर से दुनिया में परिवर्तन आ रहा है तथा एड्स व कैंसर सहित सभी रोगों व नशों से मुक्ति मिल रही है।

इस संबंध में उस दिन प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन भी दिया गया। सत्य कभी दबता नहीं है, भगवान् के घर देर है, अन्धेर नहीं । गुरुदेव के प्रिन्ट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया हैं-गुरुदेव के शिष्य, जो इस दर्शन के प्रसार प्रचार में लगे हुए हैं। एक बार गुरुदेव ने कहा था कि-

'मेरे शिष्य ही मेरे जीते-जागते अखबार हैं, जो वर्षों तक मेरा प्रचार-प्रसार करेंगे-कोई पचास साल, साठ साल, सौ साल तक। दूसरे अखबार तो बारह बजे बाद रद्दी की टोकरी में चले जाते हैं।'

www.the-comforter.org

हमें कभी भी निराशा को अपने निकट नहीं टपकने देना चाहिए। सत्य पथ पर निरन्तर सद्गुरु पर भरोसा रखते हुए चलते ही रहना है। शिष्य की गाड़ी सद्गुरु के भरोसे ही चलती है। लेकिन परिवर्तन तभी संभव है जब हमारा प्रेम एक निष्ठ हो।'प्रेम', केवल सद्गुरु भगवान् से हो।

प्रेम, प्रेम हो औ कुछ नहीं, इस संबंध में स्वामी विवेकानंद जी ने बड़ा ही मर्मस्पर्शी वर्णन किया है-

प्रेम-त्रिणोकात्मक-: प्रेम की उपमा एक त्रिकोण से दी जा सकती है, जिसका प्रत्येक कोण प्रेम के एक एक अविभाज्य गुण का सूचक है। जिस प्रकार बिना तीन कोण के, एक त्रिकोण नहीं बन सकता, उसी प्रकार निम्नलिखित तीन गुणों के बिना यथार्थ प्रेम का होना असम्भव है।

इस प्रेमरूपी त्रिकोण का पहला कोण तो यह है कि प्रेम में किसी प्रकार का क्रय-विक्रय नहीं होता। जहाँ कहीं किसी बदले की आशा रहती है, वहाँ यथार्थ प्रेम कभी नहीं हो सकता; वह तो एक प्रकार की दुकानदारी-सी हो जाती है, जब तक हमारे हृदय में इस प्रकार की थोड़ी-सी भी भावना रहती है कि भगवान् की आराधना के बदले में हमें उनसे कुछ मिले, तब तक हमारे हृदय में यथार्थ प्रेम का संचार नहीं हो सकता। जो लोग किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए ईश्वर की उपासना करते हैं, उन्हें यदि वह चीज न मिले तो निश्चय ही वे उनकी आराधना करना छोड़ देंगे। भक्त भगवान् से इसलिए प्रेम करता है कि वे 'प्रेमास्पद ' है; सच्चे भक्त के इस दैवी प्रेम का और कोई हेतु नहीं रहता।

प्रेम सर्वदा प्रेम के लिए ही होता है। भक्त इसलिए प्रेम करता है कि बिना प्रेम किये वह रह ही नहीं सकता। जब तुम किसी मनोहर प्राकृतिक दृश्य को देखकर उस पर मोहित हो जाते हो तो उस दृश्य से तुम किसी फल की याचना नहीं करते और न वह दृश्य ही तुमसे कुछ माँगता है, फिर भी उस दृश्य का दर्शन तुम्हारे मन को बड़ा आनन्द देता है, वह तुम्हारे मन के घर्षणों को हल्का कर तुम्हें शान्त कर देता है और उस समय तक के लिए मानो तुम्हें अपनी नश्वर प्रकृति से ऊपर उठाकर एक स्वर्गीय आनन्द से भर देता है। प्रेम का यह भाव उक्त त्रिकोणात्मक प्रेम का पहला कोण है। अपने प्रेम के बदले में कुछ मत माँगों। सदैव देते रहो। भगवान को अपना प्रेम दो, परन्तु बदले में उनसे कुछ भी माँगो मत।

प्रेम के इस त्रिकोण का दूसरा कोण यह है कि प्रेम में कोई भय नहीं रहता। जो लोग भयवश भगवान् से प्रेम करते हैं, वे मनुष्य अधम हैं, उनमें अभी तक मनुष्यत्व का विकास ही नहीं हुआ है। वे दण्ड के भय से ईश्वर की उपासना करते हैं। उनकी दृष्टि में ईश्वर एक महान् पुरुष है, जिसके एक हाथ में दण्ड है और दूसरे में चाबुक। उन्हें इस बात का डर रहता है कि यदि वे उनकी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे तो उन्हें कोड़े लगाये जाऐंगे। पर दण्ड के भय से ईश्वर की उपासना कहलाने योग्य है ही नहीं, फिर भी यदि उसे उपासना कहें, तो वह प्रेम की सब से भद्दी उपासना है। जब तक हृदय में किसी प्रकार का भय है, तब तक प्रेम कैसे हो सकता है? प्रेम, स्वभावतः सब प्रकार के भय पर विजय प्राप्त कर लेता है। उदाहरणार्थ यदि एक युवती सड़क पर जा रही हो और उस पर कुत्ता भौंक पड़े तो वह डरकर समीपस्थ घर में घुस जाएगी। परन्तु मान लो, दूसरे दिन वही स्त्री अपने बच्चे के साथ जा रही है और उसके बच्चे पर शेर झपट पड़ता है तो बताओ, वह क्या करेगी ? बच्चे की रक्षा के लिए वह स्वयं शेर के मुहँ में चली जायेगी।

सचमुच, प्रेम समस्त भय पर विजय प्राप्त कर लेता है। भय इस स्वार्थ पर भावना से उत्पन्न होता है कि मैं दुनिया से अलग हूँ। और जितना ही मैं अपने को क्षुद्र और स्वार्थपरत बनाऊँगा, मेरा भय उतना ही बढ़ेगा। यदि कोई मनुष्य अपने को एक छोटा सा तुच्छ जीवन समझे तो भय उसे अवश्य घेर लेगा। और तुम अपने को जितना ही कम तुच्छ समझोगे, तुम्हारे लिए भय भी उतना ही कम होगा। जब तक तुममें थोड़ा सा भी भय है, तब तक तुम्हारे मानस-सरोवर में प्रेम की तरंगे नहीं उठ सकतीं। प्रेम और भय दोनों एक साथ कभी नहीं रह सकते। जो भगवान् से प्रेम करते हैं, उन्हें डरना नहीं चाहिए।'ईश्वर का नाम व्यर्थ में न लो, इस आदेश पर ईश्वर का सच्चा प्रेमी हँसता है। प्रेम के धर्म में भगवत् निन्दा किस प्रकार सम्भव है? ईश्वर का नाम तुम जितना ही लोगे, फिर वह किसी भी प्रकार से क्यों न हो, तुम्हारा उतना ही मंगल है। उनसे प्रेम होने के कारण ही तुम उनका नाम लेते हो।

प्रेम रूपी त्रिकोण का तीसरा कोण यह है कि प्रेम में कोई प्रतिद्वन्द्वी अर्थात् दूसरा प्रेम पात्र नहीं होता, क्योंकि इस प्रेम में प्रेमी का सर्वोच्च आदर्श ही लक्षित रहता है। प्रकृत प्रेम तब तक नहीं होता, जब तक हमारे प्रेम का पात्र हमारा सर्वोच्च आदर्श नहीं बन जाता। हो सकता है कि अनेक स्थलों में मनुष्य का प्रेम अनुचित दिशा में लग जाता हो; पर जो प्रेमी है, उसके लिए तो उसका प्रेमपात्र ही उच्चतम आदर्श है। प्रत्येक व्यक्ति के उच्चतम आदर्श को ईश्वर कहते हैं। कोई चाहे ज्ञानी हो, चाहे अज्ञानी , साधु हो या पापी, पुरूष हो अथवा स्त्री, शिक्षित हो अथवा अशिक्षित, प्रत्येक दशा में मनुष्यमात्र का परमोच्च आदर्श ईश्वर ही है।

-संपादक

www.the-comforter.org

भव का भार सद्गुरु पर

एक घटना से माँ शारदा देवी को पता चल गया कि श्रीरामकृष्ण अब तिरोधान के लिए प्रस्तुत हो चुके हैं। एक रात उन्होंने देखा कि माँ काली गला टेढ़ा किये हुए हैं।

पूछने पर माँ काली ने श्रीरामकृष्ण के गले का घाव दिखाकर कहा – 'उसके कारण मुझे भी हुआ है।' माँ शारदा देवी समझ गईं कि स्वयं माँ काली भी श्रीरामकृष्ण के कष्ट से पीड़ित होकर भी यदि उन्हें अच्छा नहीं कर सकती, तो फिर मनुष्य की भला क्या बिसात ? इतना ही नहीं, श्रीरामकृष्ण ने अपनी रोगयातना का और भी एक गंभीर तात्पर्य माँ शारदा देवी को बताया था –

'जो भोग था, वह मेरे ऊपर हो गया। अब तुम लोगों में से और किसी को कष्ट भोग नहीं करना होगा। जगत् के सभी लोगों के लिए मैं भोग कर गया।' माताजी को प्रतीत हुआ कि लोक कल्याणार्थ अवतीर्ण श्रीरामकृष्ण का यथार्थ मनोभाव यही है।

–स्वामी श्री विवेकानन्द जी

www.the-comforter.org

मुख्यालयः– अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)–342001
संपर्क–0291–2753699, मो. 09784742595, YouTube:Gurudev Siyag's Siddha Yoga - GSSY
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

साधना विषयक बातें

योगमार्ग पर आराधनाशील साधक को विभिन्न प्रकार के पहलुओं का सामना करना होता है। कभी उतार, कभी चढ़ाव, मानसिक उद्वेग, कभी हँसी-खुशी, कभी बेबसी, उदासीनता, काम, क्रोध और न जाने इस योग मार्ग की यात्रा में कितने ही पड़ाव और हर मोड़ पर चौराहा और थोड़ी देर बाद दूसरे मोड़ पर फिर चौराहे आते हैं, जिससे साधक दिग्भ्रमित हो जाता है यदि उस पर सद्गुरुदेव की असीम कृपा बराबर न बनी रहे तो।

मानव से अतिमानत्व की यात्रा में, दिव्य रूपान्तरण के लिए सफलता तभी संभव है जब साधक अपने सद्गुरु के बताए पथ पर निष्कपट भाव से, गाढ़ी प्रीति रखते हुए पूर्ण समर्पण भाव से आराधना करे। श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि श्री अरविन्द घोष, श्रीमां सहित कई प्राचीन योगियों के समय, उनके शिष्यों से उनका जो वार्तालाप हुआ है, उसको समय समय पर इस शीर्षक के अंतर्गत देंगे जिससे आराधनाशील साधकों को इस मार्ग में सहायता मिल सकें।

प्रश्नः- मैंने देखा गले के नीचे एक पोखर, छाती के नीचे एक पोखर और नाभि के ऊपर एक पोखर। इन तीनों में ही पानी नहीं, सब सूखा है। काफी देर बाद देखा कि बहुत ऊँचाई पर एक पर्वत है। उस पर्वत से होकर पवित्र जल उन पोखरों में गिर रहा है। और, देखा कि इस जल में कमल खिलने लगे हैं।

उत्तरः- साधारण मन, हृदय, प्राण ही हैं ये तीन सूखे पोखर-उनके अंदर ऊर्ध्व चैतन्य की धारा प्रवाहित हो रही है-और मन, हृदय, प्राण फूलों की तरह खिल रहे हैं। लाल-गुलाबी हैं भागवत प्रेम का प्रकाश, सफेद है भागवत चेतना का।

प्रश्नः- Outer Being (बाह्य सत्ता) को कैसे बदलूँ और तुम्हारे श्रीचरणों में समर्पित करूँ ? मेरा चिंतन, खाना, पहनना, बोलना, करना, सोना सब मानों तुम्हारा ही हो। मेरा प्रत्येक श्वास-प्रश्वास मानो तुम्हारी ओर से ही आ रहा है ऐसा अनुभव होता है।

उत्तरः- बाहर की ओर यह पूर्णावस्था बाद में आती है। अभी जाग्रत् चेतना में सत्य की अनुभूति को पनपने दो। उसके परिणाम स्वरूप यह सब होगा।

पेड़ है भीतरी spiritual life (आध्यात्मिक जीवन), उसके ऊपर बैठा है सत्य का विजयस्वरूप स्वर्ण-मयूर, प्रत्येक भाग में चन्द्र है अध्यात्म शक्ति का आलोक।

प्रश्नः- ('न' को लग रहा है कि इतने दिन उसने गलत ही साधना की। सब कुछ व्यर्थ हो गया, चेतना की कोई प्रगति नहीं हुई।)

उत्तरः- जो हुआ था वह न गलत था न व्यर्थ-जैसे-जैसे चेतना खुलती जाती है दृष्टि और साधना करने का ढंग बदलता जाता है। साधना में जो अहंकार, प्राणिक कामना का मिश्रण था वह झड़ना शुरू कर देता है।

अनुभूतियाँ अच्छी हैं-यह अग्नि है psychic fire (चैत्य अग्नि)। और जिस अवस्था का तुमने वर्णन किया है वह है psychic condition (चैत्य अवस्था) जिसके अंदर अशुद्ध प्रवेश नहीं पा सकता।

यह चिंता और स्वप्न, लगता है, 'म' के मन से निकल अलक्षित भाव से तुम्हारी अवचेतना में प्रकट हुआ है। दूसरों के विचारों के आक्रमण से अवचेतन मन-प्राण की सदा रक्षा करना कठिन होता है। ये मेरे नहीं हैं ऐसा सोचकर ही अस्वीकार करना होता है।

प्रश्नः- मैं अब देख रही हूँ कि मेरा अंतर अहंकार, आत्मगरिमा, वासना, कामना, मिथ्या कल्पना, हिंसा, विरक्ति, उत्तेजना, अधिकार, आसक्ति, चंचलता, जड़ता, आलस्य आदि अजस्त्र दोषों से भरा है। मेरा कुछ भी तुम्हारी ओर नहीं खुला है, सिर्फ हृदय ही जरा-सा खुला है और psychic being (चैत्य) तुम्हें चाहता है।

उत्तरः- अवश्य ही इन दोषों को निकाल बाहर करना होगा। किंतु जब हृदय खुल गया है और चैत्य सचेतन हो रहा है तब

www.the-comforter.org

और सब खुलेगा ही खुलेगा, दोष बाधाएँ धीरे-धीरे झड़ जायेंगी।

मनुष्य-मात्र में ये सब दुर्बलताएँ रहती हैं, (उन्हें अपनी दृष्टि से बिना छिपाये) उनके बारे में सचेतन होना होता है फिर भी चैत्य जब सचेत हो गया है तो डर की कोई बात नहीं। ये सब दूर हो जायेंगी।

साधकों में चैत्य पुरुष जब सचेत होता है तब मनुष्य-स्वभाव की सब दोष व दुर्बलता वह दिखा देता है-निराशा के हेतु से नहीं, समर्पण और रूपांतर करने के लिये।

प्रश्नः- प्रायः दिन भर अनुभव होता रहा है कि कमल-पुष्प की तरह मेरे अंदर कुछ खुलता जा रहा है, और ऊपर से नील-धवल प्रकाश और शांति उतर रही हैं। जब तुम्हें याद करती हूँ तब देखती हूँ कि ज्योतिर्मय और चंद्रालोक की तरह कुछ पतला-सा तुम्हारे जगत् की ओर उठ रहा है।

उत्तरः- जो खुल रहा है वह है psychic (चैत्य) और heart (हृदय) की चेतना-ऊपर से आ रही है Higher Mind (ऊर्ध्वतर मन) और भागवत चेतना की ज्योति और शांति। जो चांद की तरह उठ रहा है वह है psychic (चैत्य) से आध्यात्मिक aspiration (अभीप्सा) का स्रोत।

आक्रमण होने पर रोना-धोना न मचाओ, शक्ति को पुकारो-शक्ति को पुकारने से शक्ति मिलेगी, आक्रमण निरस्त्र हो जायेगा।

-कुछ तो वैसा ही है, तब हाँ, बाधा किसी को आसानी से नहीं छोड़ती, खूब बड़े योगी को भी नहीं। मन की बाधा से पार पाना अपेक्षाकृत आसान होता है किंतु प्राण और शरीर की बाधा उतनी आसानी से नहीं छूटती, समय लगता है।

सांप है energy (ऊर्जा) का प्रतीक। ऊर्ध्व की एक Energy (ऊर्जा) मस्तक के ऊपर Higher consciousness (उच्चतर चेतना) में खड़ी है।

प्रश्नः- मैंने देखा है कि मैं अपनी इस देह में नहीं हूँ। एक आनंदित, मुक्त छोटी बालिका की तरह शायद तुम्हारे श्री चरणों में हूँ।

उत्तरः- तुम्हारे inner being (अंतर सत्ता) का रूप है यह।

प्रश्नः- क्या दूसरों की आलोचना करने से साधना पर कोई असर पड़ता है?

उत्तरः- निस्संदेह, इस तरह की आलोचना न करना ही श्रेयस्कर है। मनुष्य का स्वभाव है दूसरों के बारे में, इस तरह की आलोचना करने का-बहुत-से अच्छे साधक भी इस तरह की आदत छोड़ना नहीं चाहते या छोड़ नहीं सकते। किंतु इससे साधना में क्षति ही होती है, उपकार नहीं।

हां-किंतु अंदर से भोग, वासना इत्यादि का त्याग करना होता है-बाहर से सब कुछ रिक्त करने की जरूरत नहीं-शक्ति जो देती हैं उसे स्वीकार कर निरासक्त हो रहना अच्छा है।

यथा समय सब बाधाएँ चली जायेंगी -जैसे-जैसे ऊर्ध्व चेतना तन, मन, प्राण में फैलती जायेगी वैसे-वैसे बाधा का वेग कम होता जायेगा, अंततः अदृश्य हो जायेगा, नाम-निशान नहीं रहेगा।

चेतना बहिर्मुखी हो जाती है, हर समय अंतर्मुखी नहीं रहती, यह कोई बहुत संगीन बात नहीं है-जबतक अंदर का संपूर्ण रूपांतर नहीं हो जाता तब तक सबके साथ ऐसा ही होता है। इस सप्रमाण की अभिज्ञता और अनुभूति मिथ्या हैं।

शांतभाव से बैठ शक्ति (गुरु) को याद करो, उनके प्रति अपने को खोलो-यही है ध्यान का नियम।

यह तो सबके साथ ही घटता है-हर समय अच्छी अवस्था में रहना बहुत कठिन है, बहुत समय लगता है इसमें-स्थिर होकर साधना करो, विचलित न होओ। यथा समय सब हो जायेगा।

जाग्रत अवस्था में ही सब अवतरित कराना और सारी भागवत अनुभूतियाँ पाना इस योग का नियम है। निस्संदेह, प्रारंभिक अवस्था में ध्यान में ही ज्यादा होता है और वह अंततः उपकारी हो सकता है लेकिन सिर्फ ध्यान में ही अनुभूति होने से समस्त सत्ता का रूपांतर नहीं होता। इसीलिए जाग्रतावस्था में वैसा होना खूब शुभ लक्षण है।

प्रश्नः- आज देखा कि तुम्हारी गोद में सिर रखकर मानों ध्यान कर रही हूँ। और तुम्हारे शरीर से अग्निल प्रकाश बाहर निकल मेरी समस्त मलिनता को दूर कर रहा है, और एक शांत और खूब उज्ज्वल रूप बाहर निकल मुझे शांत और आलोकित कर रहा है।

उत्तरः- यही है psychic (चैत्य) की सच्ची अनुभूति, अति उत्तम। यही चाहिये।

हर रोज चिंतन न कर, भौतिक मन को ढीला छोड़ कर सदा शक्ति को याद रखना विरले ही कर पाते हैं। ऊर्ध्व चेतना के पूर्ण अवतरण के बाद ही यह संभव होता है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गुरुदेव का प्रवचन (22 मई 2003)

देखिये ! आज तो हमने धर्म की स्थिति वो करली कि इतना Complication (उलझन) है कि समझ में नहीं आता कि रास्ता क्या है, सच्चाई क्या है ? हर आदमी हर धर्माचार्य एक -दूसरे से Contradictory (विरोधात्मक) बात कर रहा है, अब किसकी मानें ? एक किताब में कुछ कह दिया, दूसरे ने कुछ लिख दिया, तीसरे ने कुछ लिख दिया। वो विद्या है- अपरा विद्या, जो आप लिख-पढ़ रहे हो, मैं उस विद्या को कुछ नहीं जानता। मैं तो इस शरीर रूपी ग्रंथ को पढ़ना जानता हूँ, मेरे गुरुदेव ने तो इसको पढ़ना सिखाया है, मैं इसको पढ़ना सिखा दूँगा। आपके सबके पास है यह किताब तो इस शरीर रूपी ग्रंथ को पढ़ने का एक तरीका है इसे पैरासाइकोलॉजी कहते हैं, परा मनोविज्ञान।

आज जो ट्रीटमेंट हो रहा है, मैं वैज्ञानिकों को कहता हूँ, डॉक्टर्स को कहता हूँ कि आपका विकास केवल साइकोलॉजी तक है, भय बताते हो। ऐसा हो जायेगा, मर जायेगा, यह रोग ऐसा है, हम कहते हैं मान जा, भय बताते हो। पैरासाइकोलॉजी भय नहीं दिखाती वो **इस शरीर रूपी ग्रंथ को पढ़ने का एक तरीका है। मैं जो बताऊँगा उससे आप आराम से इसको घर बैठे पढ़ लोगे।** सारा ब्रह्माण्ड अंदर है तो फिर हिमालय की कन्द्राओं में जाकर आराधना करने की जरूरत क्या है, हिमालय अंदर ही तो है बाहर है ही नहीं।

मैं आपको एक नाम बताऊँगा चाहे आप किसी जाति के हो, किसी धर्म के हो, किसी वर्ण के हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। यह तो एक सार्वभौम सत्ता है, Universal Change है। मेरे कई पश्चिम के शिष्य हैं।

अभी-अभी 16जनवरी 2003 को तेलअबीब से एक औरत आयी, यहुदी महिला, दीक्षा लेकर गई। मेरी एक वेबसाइट- www.the-comforter.org है, डायबिटिज केस था तो वेबसाइट open करके देखा, मेरी तस्वीर का ध्यान करने लग गई, मैं दिखने लग गया, 'ध्यान' में। एक दिन ध्यान करते-करते मैं ईसा में Transform (परिवर्तित) हो गया। उसने कहा मुझे, उसी Time (समय) मैं फिर वापस असली Form (रूप) में आ गया तो वह घबरा गई। फिर उसने कई आदमियों को बताया सौ-दो सौ को, सबके यही हो गया तो भगी हुई आयी तो मैं आपको पहले भी कहता था, अभी भी कहता हूँ कि वो लाल चमड़ी वाले टिड्डी दल की तरह यहाँ आयेंगे इस ज्ञान के लिये, आज लूटने के लिये आ रहे हैं फिर इस देश की सेवा करने के लिये आयेंगे, यह बहुत जल्दी होने वाली बात है, मैं सुखद कल्पना में बिल्कुल विश्वास नहीं करता। और सुखद कल्पना जो मर्जी करले कौन पूछता है कौन मना करता है। धर्म कोई आड़े नहीं आयेगा, आप चाहे किसी धर्म में हो, उसी धर्म में बने रहिये।

हिन्दू धर्म परिवर्तन के सिद्धान्त में कतई विश्वास नहीं करता वो तो मनुष्य के परिवर्तन की बात करता है, और इससे आगे बढ़कर मनुष्य के रूपान्तरण की बात करता है। मैं जब कहता हूँ कि 'Human body divine form में Transform (दिव्य रूप में रूपान्तरित) हो जाएगी' तो ये विज्ञान वाले बड़ा आश्चर्य करते हैं।

मगर अब जो बीमारियाँ Incurable हैं Cure हो रही हैं तो चुप हैं बेचारे। कोई मायने नहीं है आप किसी धर्म के हो, अपने धर्म में बने रहिये, मैं तो ईसाईयों को कहता हूँ 'नहीं बनाएंगे हिन्दू, जरूरत नहीं है हमको। तुमने बहुत बना लिये ईसाई- मुसलमान क्या कर लिया इनका। तुमसे ज्यादा दरिद्र आज है। इस देश में तो हम नहीं बनाएंगे, मगर यह विकास जो है उसको करना है, समस्याओं से छूटना है तो इसका एक ही तरीका है झुक के माँग लो। इसकी कीमत तुम्हारा डॉलर-पॉउण्ड नहीं है।'

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

रूपान्तरण (Transformation)

परमेश्वर ने सृष्टि का सृजन किया और उसमें विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों आदि का विकास किया। चल-अचल, सजीव-निर्जीव सबका सृजन किया है। भूमण्डल पर 'मनुष्य', परमेश्वर की सर्वोच्च कृति है, उसमें ज्ञान और विज्ञान की असीम पराकाष्ठा है। सृष्टि के क्रमिक विकास में एक कोशिकीय जीव से विशालकाय जीवों के साथ साथ मनुष्य का जन्म हुआ। प्रत्येक मनुष्य के चेतना का स्तर अलग अलग होता है। चेतना के स्तर के अनुसार ही मनुष्य की जगत् में पहचान होती है।

अत: मनुष्य सृष्टि की सर्वोच्च कृति है लेकिन अभी इस कृति में बहुत सारी अपूर्णता है जो अगले विकास में इन अपूर्णताओं को पूर्ण किया जा सकता है और वह है-अतिमानव। एक ऐसा दिव्य मानव जो रोग, शोक, पीड़ाओं और दु:ख-दर्दों से रहित होगा। वर्तमान मानव और अतिमानव में इतना भारी अंतर होगा कि अभी किसी से तुलना, कर ही नहीं सकते। महर्षि श्री अरविन्द के अनुसार मानव मात्र का दिव्य रूपान्तरण हो जाएगा। इस कार्य के लिए उन्होंने आध्यात्मिक तपस्या करके सृजनकर्ता को, भूमण्डल पर अवतरित होने के लिए करूण पुकार की। नये युग अर्थात् सत्युग के आगमन और नये जगत् के निर्माण के लिए 24 नवम्बर 1926 को भूमण्डल पर परमसत्ता का भौतिक में अवतरण हुआ। उस अवतरित शक्ति ने 1967-68 से अपना कार्य प्रारम्भ किया। गहन आराधना के बाद मनुष्य मात्र के रूपान्तरण के लिए संजीवनी मंत्र की दीक्षा दी और लाखों लोगों को चेतन कर दिया।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग का मुख्य उद्देश्य है-संपूर्ण मानव जाति का दिव्य रूपान्तरण। इस कार्य के लिए उन्होंने जो संजीवनी मंत्र दिया है, उनका बिना कोई पल गँवाएं सघन जाप और नियमित ध्यान करना है। इस कार्य में किसी भी प्रकार की चालाकी, कपटता और अहंकार बाधक ही होगा। जिन्होंने संजीवनी मंत्र की दीक्षा ली है-वे प्रतिपल पूरी एकाग्रता से, अपने गृहस्थी जीवन के सभी कर्तव्यों का पालन करते हुए, इस आराधना को करें। सद्गुरु आराधना का पथ बताते हैं, चलना तो शिष्य को ही पड़ता है। सद्गुरु तभी प्रसन्न होते हैं, जब शिष्य आराधना में आगे बढ़ता है।

इस रूपान्तरण के कार्य के लिए श्री अरविन्द ने विस्तार से समझाया है कि यह कैसे पूर्ण होगा? साधकों के ज्ञान-बोध के लिए यह लेख दिया जा रहा है-

www.the-comforter.org

किन्तु हमारी भवितव्यता में देह की भूमिका के संबंध में यह धारणा उस साधना के लिए तो काफी उपयोगी हो सकती है जो पृथ्वी को मात्र एक अज्ञान क्षेत्र जानता हो और पार्थिव जीवन को केवल उद्धाररूप निवृत्ति की तैयारी, पर यह उस साधना के लिए पर्याप्त नहीं है जो पृथ्वी पर दिव्य जीवन की कल्पना करें, और स्वयं पार्थिव प्रकृति के ही उद्धार को इस धरती पर आत्मा के देह धारण के पूर्ण उद्देश्य का एक अंग माने। यदि हमारा लक्ष्य सत्ता का पूर्ण रूपांतर है तो देह का रूपांतर उसका एक अनिवार्य अंग होना चाहिए।- इसके बिना पृथ्वी पर अखिल दिव्य जीवन संभव नहीं है।

श्री अरविन्द के अनुसार भौतिक तत्त्व के अतिमानसीकरण का प्रमुख लक्षण है ग्रहणशीलता। फिर वह एक सचेतन संकल्प शक्ति के आदेशों का पालन कर सकेगा और अपने आपको उसकी इच्छा के अनुरूप ढाल लेने में उसी प्रकार समर्थ होगा, जैसे एक शिल्पी की अंगुलियों में मृत्तिका। जब भौतिक द्रव्य अपने अंदर अंतर्वलित आत्मा की शक्ति को उन्मुक्त कर प्रकट रूप में सचेतन हो जायेगा, तब वह अतिमानसिक चेतना के समरूप स्पंदों को प्रत्युत्तर देने की क्षमता रखेगा, जैसे क्रोध के स्पंद का उत्तर हम क्रोध से देते हैं या प्रेम के स्पंद का हृदय की प्रगाढ़ भावना से। अतिमानसिक बने भौतिक द्रव्य का मुख्य गुण होगा सचेतन नमनशीलता। इसी मूलभूत गुण से अन्य सब विशेषताएँ नि:सृत होती हैं : अमरता, या कम से कम आकृति में कुछ परिवर्तन करने की, अथवा इच्छानुसार रूप बदल लेने की क्षमता, भारहीनता, सुंदरता, भास्वरता, ये सब अतिमानसिक द्रव्य के स्वाभाविक लक्षण होंगे- शरीर चरम सौंदर्य तथा आनंद की अभिव्यक्ति का आधार बन सकेगा। जिस प्रकार दीपक अपने उर में बसी ज्वाला के तेज को प्रतिबिंबित और प्रकाशित करता है, उसी तरह वह आत्मा की सब ओर फैलती हुई, किरणें बन-बन छिटकती हुई ज्योतिश्री को अपने अंदर

से प्रक्षिप्त करेगा। शरीर आत्मा के परम सुख को, मानसिक बोध जनित प्रमोद को, जीवन धारण करने के हर्षोन्माद को, अपने आध्यात्मिक परितोष को, आत्मिक चैतन्य में उन्मुक्त तथा अनवरत आह्लाद से उल्लसित भौतिक द्रव्य के आनंद को अपने ही अंदर वहन करेगा। वेदों में पहले ही कहा है न-'तब तेरी मानवता देवकृति तुल्य बनेगी, मानो इस द्युलोक का तू ही प्रत्यक्ष आधार हो' (ऋग्वेद, ५.६६.२)।

श्री अरविन्द इन हृदयहारी परिवर्तनों से पूर्व, जिनका शायद सबसे अंत में आविर्भाव हो, हमारे शरीर के अंगों में बहुत बड़े परिवर्तन की परिकल्पना करते हैं।

जिन्हें श्री अरविन्द ने अपने शरीर में अनुभव किया था। उन्होंने लिखा है - स्वयं भौतिक अवयवों की क्रियाविधि में परिवर्तन अनिवार्य होगा और संभव है कि उनके संघटन और महत्त्व तक में हेर-फेर हुए बिना न रहे। नया भौतिक जीवन इन अंगों की असमर्थताओं से बधे रहना स्वीकार नहीं करेगा, न उनकी सीमाएँ मानने को वह बाध्य होगा... मस्तिष्क, विचारों के बाह्य रूप का संवाहक उपकरण होगा और उनकी बैटरी बन जायेगा जिसके द्वारा वे शरीर पर और बाहर संसार पर अपना दबाव डालेंगे। फिर उनकी शक्ति वहाँ सीधे अपना कार्य संपन्न करेगी और वे भौतिक साधनों के बिना ही एक मानस से दूसरे मानस में संचार करेंगे। इसी तरह किसी भी माध्यम बिना, वे अन्य लोगों के विचारों और कार्यों को, उनके जीवन को प्रभावित करेंगे, भौतिक वस्तुओं पर भी अपना असर डालेंगे।

मस्तिष्क की तरह हृदय भी अपना संवाद सीधा आप देगा और चैत्य-केन्द्र की शक्तियों द्वारा जगत् में बाहर प्रक्षिप्त भावों और संवेगों के विनिमय का वह साधन बनेगा। हृदय स्वयं हृदय को उत्तर दे सकेगा; जीवन-शक्ति अन्य जीवनों की सहायता करने में समर्थ होगी, और अपरिचित या दूरस्थ होने पर भी उनकी सहायतार्थ पुकार का उत्तर देगी; बाह्य संपर्क के नितांत अभाव में भी अनेक व्यक्ति एक ही दिव्य केन्द्र से संवाद प्राप्त कर पुलकित होंगे और गुह्यलोक में उनका मिलन होगा।

संभव है कि संकल्प शक्ति हमारे आहार के साथ संबद्ध अंगों पर अपना प्रभुत्व जमा सके और स्वास्थ्य को स्वतः सुरक्षित रखे। भोजन के लिए इच्छा और लालसा को दूर कर वह सूक्ष्मतर रीतियाँ लागू करे, या विश्वव्यापी प्राणशक्ति से बल और सारतत्त्व आहरण करे, जिससे शरीर किंचित् क्षय के बिना अपने सारतत्त्व और बल को चिरकाल तक बनाये रखने में समर्थ हो। इस प्रकार उसे भोज्य पदार्थों द्वारा पोषण की कोई भी आवश्यकता न रहेगी, पर उस दशा में भी लगातार अत्यधिक कड़ा काम करते जाने पर न तो उसे थकान लगेगी और न ही सोने या आराम करने के लिए बीच में रुकना पड़ेगा... मालूम होता है कि हम जीवन के मूल में जो अद्भुत व्यापार - यानी अपने परिसर में अपने पोषण और पुनरुज्जीवन के साधन ग्रहण करने की शक्ति देखते हैं - वही चीज शायद फिर से हमारे सामने आयेगी और वही जीवन के विकासश्रृंग पर पुनः प्रतिष्ठित होगी। सिद्ध-संपन्न मानव मनस्तत्त्व से ऊपर उसी चीज को सचेतन रूप में पुनः प्राप्त करता है जिसे कि पहले से ही जड़तत्त्व अचेतन रूप में प्रस्तुत कर रहा है- अर्थात परम शांति और महाशक्ति- क्योंकि यह सच है कि जड़तत्त्व परम आत्मन् की केवल निद्रावस्था है।

श्री अरविन्द का विचार है कि रूपांतर की उत्तरावस्था में हमारे अंगों का सब काम हमारी चेतना के विभिन्न केन्द्रों अथवा चक्रों की सक्रिय शक्ति द्वारा संपादित हुआ करेगा। वस्तुतः तभी निम्न विकास में परिकल्पित पशु-मानव नये विकास के मनस्वी मानव में पदार्पण करेगा।

श्री अरविन्द और श्री माँ ने जिन दुष्कर कार्यों को संपन्न करने का बीड़ा उठाया है, यह उनमें से एक है। योग-साधना की पूर्वावस्था में ही हमें पता चल गया था कि एक चित्-शक्ति-प्रवाह, जो भिन्न-भिन्न स्तरों पर भिन्न-भिन्न चक्रों में विभक्त होता जाता है, हमारी उच्चतम से लेकर नितांत सांसारिक तक प्रत्येक क्रिया को, उस-उस क्रिया के अनुरूप विभिन्न स्पंदों द्वारा पोषित या प्रवर्तित किया करता है। और यदि हमने इस प्रवाह से काम लेने की जरा भी चेष्टा की तो इसे एक अथाह शक्ति का भंडार पाया जिसे केवल हमारी धारण क्षमता की क्षुद्रता ने सीमित कर रखा है।

अतः कल्पना करनी कठिन नहीं कि विकासक्रम में हमारे अंगों, जो कि इस पश्चवर्ती प्रवाह का भौतिक रूपांतरण अथवा स्थूल सांद्रण मात्र हैं, का कार्य सीधे ये चेतना-केन्द्र संभाल लें, और वे अपनी शक्तियों का नवीन देह में उसी प्रकार विकिरण करें जिस प्रकार हमारी देह में हृदय, रक्त और स्नायु फैले हुए हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

Thu 7 JULY 1988

Vikrami—20 Asadh	2045	Saka—16 Asadh	1910
Samvat—9 Asadh Badi	2045	Hijri—22 Zilkad	1408

गुरुवार ७ जुलाई आषाढ़ बदी ९ वि. २० आषाढ़ सं. २०४५

दूसरे के चित्त का कोई ठिकाना नहीं।

पुनर्जन्म को प्रमाणित करना अति आवश्यक है।

सनातन धर्म के सर्वोत्तम ग्रंथ में भगवान् ने पुनर्जन्म की स्पष्ट व्याख्या करते हुए कहा है:-

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्॥
गीता १५: ८॥

वायु गन्ध के स्थान से गन्ध जैसे (ग्रहण करके ले जाते हैं) देहादिकों का स्वामी जीवात्मा भी जिस पहले शरीर को त्यागता है, उससे मनसहित इन्द्रियों को ग्रहण करके फिर जिस शरीर को प्राप्त होता है, उसमें जाता है।

जब तक हम गीता में वर्णित उपरोक्त सच्चाई को संसार के सामने प्रमाणित नहीं कर सकेंगे, कोई भी व्यक्ति हमारी बात को क्यों मानेगा? उपरोक्त सच्चाई को संसार के समान प्रमाणित करना अति आवश्यक कार्य है। थोपे नीति के विषय में उपदेश से अब काम नहीं चलेगा। भगवान की उपरोक्त व्याख्या के अनुसार जब तक मनुष्य अन्तर्मुखी होकर जीवात्मा से सम्पर्क करने की स्थिति में नहीं पहुँचता इस का समाधान असम्भव है। इस पथ में पहले स्थूल शरीर में स्थित सूक्ष्म शरीर से साक्षात्कार करना पड़ेगा। इसके बाद सूक्ष्म शरीर को भेदकर कारण शरीर से साक्षात्कार करना होगा। फिर ज्योंही कारण शरीर का भेदन हुआ कि आत्मा से साक्षात्कार हो जायेगा। आत्मा प्राणमय से लेकर सभी जन्मों का ज्ञान करवाने में सक्षम है। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध को अनेक जन्मों का ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह तो हुआ बीते समय का ज्ञान। परन्तु क्यों कि जीवात्मा परमात्मा का ही अंश है। वह अमर है। उसमें और भगवान् में कोई अन्तर नहीं है। अतः संसार में आगे होने वाली बातों का भी ज्ञान होना सम्भव है। हमें वह शक्ति प्राप्त करनी है। अब वह समय दूर नहीं है।

एम लाल 05-7-88

महान् योगी

''ये महामानव (श्री रामकृष्णदेव परमहंस) असामान्य नहीं थे; वे तुम्हारे और हमारे समान ही मनुष्य थे। पर वे महान् योगी थे। उन्होंने यह ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर ली थी; हम और तुम भी इसे प्राप्त कर सकते हैं। वे कोई विशेष व्यक्ति नहीं थे।

एक मनुष्य का उस स्थिति में पहुँचना ही इस बात का प्रमाण है कि उसकी प्राप्ति प्रत्येक मनुष्य के लिए संभव है। संभव ही नहीं,बल्कि प्रत्येक मनुष्य अंत में उस स्थिति को प्राप्त करेगा ही, और यही है-धर्म।''

-स्वामी विवेकानन्द

www.the-comforter.org

High Blood Pressure Cured

My name is Itumeleng Davids. I am from Kimberley, South Africa. Before I came to know about Gurudev Siyag, I was suffering from the problem of High Blood Pressure. My blood pressure used to be around 240/180 and I also used to drink liquor.

Then I came to know about Gurudev Siyag Siddha Yoga through my friend. I started practicing it. I chanted the mantra seriously and meditated. Now my blood pressure is almost in the normal range. It is generally around 120/94. I don't drink anymore. All this has happened only because of Gurudev's meditation and mantra chanting. I thank Gurudev with all my heart.

-Itumeleng Davids
Kimberley, South Africa

गतांक से आगे...

मानस की नीरवता

एक गुह्य मंत्र की तरह है, जिसमें एकमात्र हमारे लिए ही शक्ति निहित है। यदि मनुष्य (उसे प्रयत्नपूर्वक पकड़े रखे तो काम कहीं आसान हो जाता है, क्योंकि तब हमारी मनोवृत्ति नकारात्मक से सकारात्मक में बदल जाती है। हम अपने गुह्य मंत्र को जितना अधिक जपते हैं, उतनी ही उसकी शक्ति बढ़ती है।

हम जब मन को नीरव करने के लिए आँखें मूंद कर बैठते हैं, तब पहले तो विचारों की प्रचंड धारा हमें निमलित कर देती है-वे घबराए हुए, बल्कि यों कहें कि हमला करने के लिए तैयार चूहों की तरह सब तरफ से बढ़े चले आते हैं। इस गुलगपाड़े से पार पाने का एक ही उपाय है-वह है प्रयत्न करना, धैर्य और दृढ़ता के साथ प्रयत्न करते ही जाना।

विशेषतया मानस के विरुद्ध मानसिक संघर्ष करने की कभी साधक भूल से भी गलती न करे। आवश्यकता होती है केंद्र का स्थान बदलने की। मानस से ऊपर अथवा अधिक गहराई में हम सब की अपनी एक अभीप्सा होती है, वही, जिसने हमें इस पथ पर ला खड़ा किया है, वह हमारी सत्ता की एक आवश्यकता है, एक गुह्य मंत्र की तरह है, जिसमें एकमात्र हमारे लिए ही शक्ति निहित है। यदि मनुष्य उसे प्रयत्नपूर्वक पकड़े रखे तो काम कहीं आसान हो जाता है, क्योंकि तब हमारी मनोवृत्ति नकारात्मक से सकारात्मक में बदल जाती है। हम अपने गुह्य मंत्र को जितना अधिक जपते हैं, उतना ही उसकी शक्ति बढ़ती है। हम किसी कल्पित चित्र का प्रयोग भी कर सकते हैं, जैसे एक असीम सागर का जिसमें कहीं कोई छोटी लहर भी नहीं उठ रही हो। हम अपने आपको उसके ऊपर बहने देते हैं, पानी पर तख्ते की तरह निश्चेष्ट पड़े हैं, और हम स्वयं वह शान्त असीमता बन जाते हैं। इस तरह हम केवल नीरवता ही नहीं, वरन् साथ ही चेतना को विशाल बनाना भी सीख जाते हैं। सच तो यह है कि हरेक को अपना तरीका अपने आप ढूँढना है। और इस काम में अधीरता व तनाव जितने कम रहेंगे, उतनी ही जल्दी सफलता मिलेगी।

इस हेतु मनुष्य किसी भी एक विधि को आरंभ कर सकता है जिसका साधारणतया अर्थ है, चिर प्रयास, और ऊपर से महती नीरवता क्षिप्र हस्तक्षेप अथवा निज अभिव्यक्ति द्वारा आरंभ से ही उस पर अपना आधिपत्य जमा सकती है, जिसका फल आरंभ में उपयुक्त साधनों के अनुपात में कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा होता है।

मनुष्य शुरू करता है विधि के अनुसार, पर ऊपर से अवतरित भगवत्कृपा, उस परम देव की कृपा जिसके लिए हम अभीप्सा करते है, इस काम का भार उठा लेती है, अथवा उस परम आत्मन् की अनंतता ही धावा बोल देती है। स्वयं मुझे ही मन की पूर्ण नीरवता, जिसकी मैं साक्षात् अनुभूति से पूर्व कल्पना भी नहीं कर सकता था, इसी विधि के द्वारा प्राप्त हुई थी। यह बात हमारे लिए बहुत ही महत्त्व रखती है। हमें ख्याल होने लगता है कि योग की ये अनुभूतियाँ बड़ी सुंदर हैं, बड़ी रोचक है, पर आखिर हम सामान्य मानवों से हैं तो ये दूर की चीज ! जो हमारी अवस्था है, उसमें हम कैसे कभी वहाँ पहुँच सकते हैं? परन्तु अपने वर्तमान अस्तित्व के आधार पर उन संभावनाओं का निर्णय करना जो एक दूसरे अस्तित्व से संबंध हैं, यह हमारी भूल है। और फिर योग की तो यह एक खास खूबी है कि केवल इसी के लिए कि किसी ने इस पथ पर चलना शुरू किया है, वह आप से आप उन कार्य-क्षमताओं और अदृश्य शक्तियों का एक पूरा क्षेत्र जाग्रत कर देता है, जो हमारे बाह्य सत्ता की संभावनाओं से कहीं अधिक बढ़ी-चढ़ी हैं, और वे हमारे लिए वह सब कर दे सकती हैं जो करने में साधारणतया हम असमर्थ रहते हैं।

मनुष्य के लिए आवश्यक है कि बाह्य मानस और आंतरिक सत्ता का अंतर्वर्ती रास्ता साफ हो जाए... क्योंकि वे (योग संबंधी चेतना और उसकी शक्तियाँ) पहले से ही तुम्हारे अंदर विद्यमान हैं और इस सफाई का सबसे अच्छा तरीका है मन को नीरव करना। हम यह नहीं जानते कि हम कौन हैं, और हम क्या करने योग्य हैं और क्या नहीं, इस विषय में तो हमारा ज्ञान और भी कम है।

संदर्भ-'चेतना की अपूर्व यात्रा' पुस्तक से

www.the-comforter.org

कहानी

आज्ञा और त्याग का प्रभाव

एक समय चक्ववेण नाम के एक राजा हुए थे। वे बड़े ही सद्गुण सम्पन्न, धर्मात्मा, सत्यवादी, स्वावलम्बी, अध्यवसायशील, त्यागी, विरक्त, ज्ञानी, भक्त, तेजस्वी, तपस्वी और उच्च कोटि के अनुभवी महापुरुष थे। वे राज्य के द्रव्य को दूषित समझकर उसे स्वयं अपने और अपनी पत्नी के काम में नहीं लाते थे। प्रजा से जो कुछ 'कर' लिया जाता था, वह सारा-का-सारा प्रजा की ही सेवा में लगा दिया जाता था। राज्य का कार्य वे निराभिमानपूर्वक निष्काम भाव से तन-मन से किया करते थे। प्रजा पर उनका बड़ा प्रभाव था। रामराज्य की भाँति उनके राज्य में कोई दुःखी नहीं था, सभी सब प्रकार से सुखी थे।

वे अपने शरीर निर्वाह के लिये पृथक् खेती किया करते थे। वे अपने ही खेत में उपजे हुए अन्न से अपना भरण-पोषण करते थे। वे गन्ना, रूई, अनाज, फल और शाक की खेती किया करते थे। उनकी पत्नी के पास कोई भी आभूषण नहीं थे; क्योंकि वे राज्य के द्रव्य से तो आभूषण बनवाते नहीं और अपनी की हुई खेती की उपज से केवल सादगी से खाने पहनने का कामभर चलता था। खेती के सिवाय उन्हें राज्य के कार्यों में भी तो समय देना पड़ता था। उनका जीवन एक सीधे-सादे सदाचारी किसान के-जैसा था। छह घंटे शयन के सिवाय उनका सारा समय ईश्वरभक्ति, परोपकार, राज-कार्य और कृषि के कार्यों में ही बीतता था। उनका सब जीवों के प्रति समता, दया और प्रेम का भाव समान था। वे सब प्राणियों को परमात्मा का स्वरूप मानकर सबकी निष्काम प्रेमभाव से सेवा करते थे। वे स्वावलम्बी थे; वे जो कुछ भी कार्य करते, आसक्ति और अहंकार से रहित होकर बड़े ही उत्साह और धैर्य से किया करते।

एक दिन की बात है। जिस देश में

राजा चक्ववेण रहते थे, वहाँ एक बड़ा भारी मेला लगा। उसमें नगर के अन्यान्य प्रान्तों के लोग बड़ी भारी संख्या में इकट्ठे हुए। राजा-रानी के दर्शन के लिये यों तो बराबर ही लोग आते रहते, पर मेले के कारण नर-नारियों की भीड़ कुछ अधिक रहती थी। राजा के पास अधिकतर पुरुष आते और रानी के पास अधिकतर स्त्रियाँ आया करती थीं। एक दिन बहुत-से गहनों और रेशमी वस्त्रों से सजीधजी अनेक दासियों से घिरी हुई बहुत-सी धनी व्यापारियों की स्त्रियाँ रानी का दर्शन करने के लिये उनके पास आयीं।

उन स्त्रियों ने कहा-'रानीजी ! आपके-जैसे वस्त्र तो हमारी मजदूरनियाँ भी नहीं पहनतीं; आप हमारी दासियों को देखिये, कैसे वस्त्राभूषण पहने हैं। आपके वस्त्राभूषण तो हम लोगों से भी बढ़कर होने चाहिये।' जैसे ये हमारी दासियाँ हैं, उसी प्रकार हमलोग तो आपकी दासी के समान हैं। आपके स्वामी बड़े सम्राट हैं, आप उनसे थोड़ा-सा भी संकेत कर देंगी तो वे आपके लिये हम लोगों से बढ़कर वस्त्राभूषण की व्यवस्था कर देंगे। आप हमारी स्वामिनी हैं, इसलिये हमें आपको इस वेश में देखकर दुःख होता है। ऐसे वस्त्र तो भीख माँगनेवाली भिखारिन भी पहनना नहीं चाहती। एक सम्राट की महारानी के जैसे वस्त्राभूषण होने चाहिये हम उसी रूप में आपको देखना चाहती हैं।' इस प्रकार कहकर वे अपना प्रभाव डालकर चली गयीं। रानी के चित्त पर उनकी बातों का बड़ा असर पड़ा।

रात्रि में जब महाराज आये, तब रानी ने सब घटना उनको सुनायी और दिन में जो कुछ धनी व्यापारियों की स्त्रियों ने कहा था, सब राजा से निवेदन किया एवं उनसे अनुरोध किया कि मेरे पहनने के लिये बहुमुल्य वस्त्र और आभूषण मँगा दीजिये। राजा ने उत्तर दिया- कैसे मँगा दूं ? व्यवहार में लाना तो दूर रहा, मैं राज्य के पैसों को छूता भी नहीं, उससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। रानी भी बहुत उच्च कोटि की पवित्र स्त्री थी,

किन्तु वस्त्राभूषणों से सजी-धजी धनिकों की स्त्रियों का उन पर काफी असर पड़ चुका था, अतः रानी ने कहा-'चाहे जैसे भी हो, आप सम्राट हैं और मैं आपकी पटरानी हूँ। मेरे लिये तो एक सम्राट् की पटरानी के योग्य बहुमूल्य वस्त्राभूषण मँगाने की कृपा आपको करनी ही होगी।' पत्नी की प्रीति से प्रेरित राजा ने सोचा-'रानी कितना भी आग्रह क्यों न करें, मैं राज्य के द्रव्य को तो किसी भी हालत में उपयोग में ला नहीं सकता, किंतु मैं सम्राट् हूँ; दुष्ट, अत्याचारी और बलवान् राजाओं से 'कर' ले सकता हूँ।' यह सोचकर उन्होंने पर-राष्ट्रों तथा अधीनस्थ राज्यों के कार्य का सम्पादन करनेवाले मन्त्री को बुलाया और कहा-'मन्त्री ! आप राक्षसराज रावण के पास जाइये और कहिये कि राजा चक्ववेण की ओर से मैं आया हूँ, उन्होंने मुझे आपसे 'कर' के रूप में सवा मन सोना प्राप्त करने के लिये आपके पास भेजा है।'

सम्राट की आज्ञा से मन्त्री कुछ आदमियों को ले रथ में बैठकर समुद्र के किनारे पहुँचे और फिर जलयान के द्वारा समुद्र के उस पार पहुँचकर लंका में प्रवेश किया तथा राजसभा में जाकर बड़ी नम्रता और सभ्यता के साथ सम्राट चक्ववेण का संदेश सुनाया। संदेश को सुनते ही रावण हँसा और उसने सभासदों से कहा-'देखो, ऐसे मूर्ख राजा भी संसार में अभी हैं, जो ऋषि, देवता, राक्षस आदि सभी से 'कर' लेने वाले मुझ-जैसे बलवान् सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र महान् सम्राट् से भी कर की आशा रखते हैं !' उन्होंने राजा चक्ववेण के दूत को कैद करना चाहा, किन्तु सभासदों के अनुरोध करने पर उसे छोड़ दिया। वह रावण की सभा से उठकर समुद्र के किनारे लौट आया।

तदनन्तर रावण जब रात्रि में मन्दोदरी के पास महल में गया, तब रावण ने हँसकर मन्दोदरी से विनोद करते हुए कहा-भारतवर्ष में चक्ववेण नाम का कोई एक राजा है। आज उसका एक दूत सभा में आया था और उसने मुझसे सवा मन स्वर्ण, 'कर' के रूप में देने को कहा। मुझे इस पर बड़ी हँसी आयी। देखो, संसार में ऐसे मूर्ख भी अभी तक जीते हैं जो मुझ-जैसे सबसे कर लेनेवाले से भी कर लेने की आशा रखते हैं ! मैं तो उसके दूत को कैद करना चाहता था, पर सभासदों के अनुरोध से उसे छोड़ दिया।' मन्दोदरी ने दुःख प्रकट करते हुए कहा-'स्वामिन् ! आपने बहत बुरा किया। चक्ववेण को मैं जानती हूँ, वे सत्यवादी और धर्मात्मा राजा हैं। उनका चक्र चलता है। जो उनकी आज्ञा का पालन नहीं करता, उसका अनिष्ट हो जाता है। उस दूत को संतोष कराकर ही आपको उसे भेजना चाहिये था। उसका पता लगाकर अब भी उसको संतोष करा दें, नहीं तो पता नहीं, हमारा कितना अनिष्ट हो जायगा।' रावण बोला...'तू बड़ी डरपोक है, मामूली मनुष्य-राजाओं से तू इतना भय करती है, मैं इसकी कुछ भी परवाह नहीं करता।' रानी ने कहा-'कल प्रातःकाल मैं आपको चक्ववेण का प्रभाव दिखलाऊँगी।' प्रातः होते ही राजा के साथ मन्दोदरी महल के छत पर गयी, जहाँ वह रोज पक्षियों को अनाज डाला करती थी। अनाज चुगने वहाँ बहुत से पक्षी आया करते थे। मन्दोदरी ने दाने चुगते हुए पक्षियों से कहा 'राजा रावण की दुहाई है, खबरदार ! दाने न चुगना।' किंतु वे चुगते ही रहे। फिर रानी ने राजा से कहा-'देखिये, आपके सम्मुख और आपकी दुहाई देने पर भी ये सब दाने चुगते ही रहे।'

रावण ने कहा 'मूर्ख ! ये पक्षी बेचारे क्या समझें !' मन्दोदरी बोली-'अब आप राजा चक्ववेण के प्रभाव को देखिये।' फिर उसने पक्षियों से कहा-'सावधान ! चक्ववेण की दुहाई है, कोई दाने न चुगना।' इतना सुनते ही सब पक्षियों ने एक साथ दाने चुगने बंद कर दिये। उनमें से एक पक्षी बहिरा था, वह कुछ भी सुन नहीं पाता था; अतः उसने दाना उठा लिया। ज्यों ही उसने दाना उठाया, त्यों ही उसकी गर्दन टूटकर गिर गयी। रानी ने रावण से कहा-'देखिये, राजा चक्ववेण की दुहाई पर सबने दाने चुगने बंद कर दिये, एक बहिरे पक्षी ने न सुनने के कारण दाना उठा लिया, जिससे चक्ववेण के चक्र से उसका मस्तक कटकर गिर गया। फिर रानी पक्षियों से बोली-'अब मैं चक्ववेण की दुहाई हटा देती हूँ, अब दाने चुगो।' तुरन्त सब पक्षी दाने चुगने लगे। रानी ने फिर कहा-'जो तुम्हारे सम्मुख खड़े हैं, उन राजा रावण की दुहाई है, कोई भी दाने न चुगना। किंतु राजा रावण के

www.the-comforter.org

सामने रहते हुए भी किसी ने परवाह न की और वे दाने चुगते ही रहे। मन्दोदरी ने रावण से कहा-'देखिये आपका इन पक्षियों पर कुछ भी असर नहीं होता, परन्तु राजा चक्ववेण के प्रभाव पर विचार कीजिये, उनके सामने न रहते हुए भी उनका कितना असर है। रावण ने कहा-'मालूम होता है तुम्हारी इसमें कोई माया है। नहीं तो, ये पक्षी बेचारे क्या समझें।' ऐसा कहकर रावण टालमटोल करके राजसभा में चला गया।

इधर, राजा चक्ववेण के मन्त्री ने समुद्र के किनारे एक नकली लंका की रचना की। उसने कज्जल के समान अत्यन्त महीन मिट्टी को समुद्र के जल में घोलकर रबड़ी की तरह बना लिया तथा तट की जगह को चौरस बनाकर उस पर उस मिट्टी से एक छोटे आकार में नकली लंका की रचना की। धुली हुई मिट्टी को बूंदों को टपका-टपकाकर उसी से लंका के परकोटे बुर्ज और दरवाजों आदि की रचना की। परकोटे के चारों ओर कँगूरे भी काटे गये एवं उस परकोटे के भीतर लंका की राजधानी और नगर के प्रसिद्ध बड़े-बड़े मकानों को भी छोटे आकार में रचना करके दिखाया गया। इन सबकी रचना करने के बाद वह पुनः रावण की सभा में गया। उसे देखकर रावण चौंक उठा और उससे बोला-'क्यों जी, तुम फिर यहाँ किसलिये आये हो?' उसने कहा-'मैं आपको एक कौतूहल दिखलाना चाहता हूँ। आप मेरे साथ समुद्र तट पर चलिये।' रावण कौतूहल देखने को उत्सुक हो गया और कुछ सभासदों को साथ लेकर समुद्र तट पर गया, जहाँ उस मन्त्री ने छोटे आकार में नकली लंका की रचना की थी।

उसने रावण से पूछा-'देखिये, यह ठीक-ठीक आपकी लंका की नकल है न?' रावण ने उसकी अद्भुत कारीगरी देखी और कहा-'ठीक है; क्या यही दिखाने के लिये मुझे यहाँ लाये थे?' मन्त्री बोला-'नहीं-नहीं, इस लंका से आपको मैं एक कौतूहल दिखाता हूँ; देखिये, लंका के पूर्व का परकोटा, दरवाजा, बुर्ज और कँगूरे साफ-साफ ज्योंके-त्यों दीख रहे हैं न? रावण ने कहा-'दीख रहे हैं।' मन्त्री ने कहा-'मेरी रची हुई लंका के पूर्व द्वार के कँगूरों को मैं राजा चक्ववेण की दुहाई देकर गिराता हूँ, इसके साथ ही आप अपनी लंका के पूर्व द्वार के कँगूरे गिरते हुए देखेंगे।'इतना कहकर मन्त्री ने 'राजा चक्ववेण की दुहाई है'कहकर अपनी रची लंका के पूर्व द्वार के कँगूरे गिरा दिये।

उनके गिरने के साथ-साथ ही रावण को असली लंका के पूर्व द्वार के कँगूरे गिरते हुए दिखायी दिये। यह देखकर रावण को बड़ा आश्चर्य हुआ। इसके बाद दूत ने कहा-'अब मैं अपनी रची हुई लंका के पूर्व के परकोटे के द्वार के आस-पास की चारों बुर्जे मिटाता हूँ, इसके साथ-साथ ही आप अपनी असली लंका के बुर्जों को भी मिटता हुआ देखेंगे।' यह कहकर उसने चक्ववेण की दुहाई देकर अपनी बनायी मिट्टी की लंका की बुर्जे मिटा दी, उसके साथ ही रावण की असली लंका के पूर्वद्वार की बुर्जे भी चकनाचूर होकर नष्ट हो गयीं। यह देखकर रावण को बहुत ही आश्चर्य हुआ और उसे मन्दोदरी की कही हुई बात याद आ गयी।

तदनन्तर राजा चक्ववेण के मन्त्री ने कहा-'राजन्! आप यदि सवा मन सोना 'कर' के रूप में नहीं देंगे तो भी राजा चक्ववेण को आप से युद्ध करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। राजा चक्ववेण के प्रभाव का चक्र चलता है। मैं अकेले ही आपकी लंका को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये काफी हूँ। अभी राजा चक्ववेण की दुहाई देकर आपकी लंका को क्षणमात्र में एक हाथ के झटके से नष्ट किये देता हूँ। आप उस लंका की रक्षा कर सकें तो करें। यदि आपको लंका की रक्षा करनी है तो 'कर' के रूप में सवा मन सोना दे दीजिये। इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है।'

रावण ने सोचा-'मेरे देखते-देखते क्षणमात्र में पूर्वद्वार के कँगूरे और चारों बुर्जे गिर गयीं, जो धातुनिर्मित और बहुत ही मजबूत थीं। इसी प्रकार इस सारी लंका को नष्ट करना इसके बायें हाथ का खेल है।' यह सोचकर रावण ने सवा मन सोना 'कर' के रूप में देना स्वीकार कर लिया और मन्त्री से कहा-'चलिये, मैं आपको सवा मन सोना दे देता हूँ। तत्पश्चात् उन्हें सवा मन सोना देकर विदा किया।

मन्त्री सवा मन सोना लेकर राजा चक्ववेण के पास वापस लौट आया। उसने राजा-रानी के पास जाकर उनके सामने सवा मन सोना रख दिया और

www.the-comforter.org

कहा-'आपकी आज्ञा से रावण से 'कर' के रूप में सवा मन सोना ले आया हूँ।' राजा के यह पूछने पर कि 'तुमने यह सोना कैसे प्राप्त किया?' उसने आद्योपान्त सारी घटना उनको कह सुनायी।

यह घटना सुनकर रानी को बड़ा आश्चर्य हुआ और उस पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने राजा से पूछा-'यह क्या बात है?' राजा ने कहा- 'हमलोग स्वावलम्बी होकर परिश्रमपूर्वक खेती करके अपना निर्वाह करते हुए वैराग्य और त्यागपूर्वक अपना जीवन बिताते हैं और निष्कामभाव से प्रजा के धन को प्रजा की सेवा में ही लगा देते हैं, अपने व्यक्तिगत कार्य के लिये राज्य के पैसे को छूते तक भी नहीं, इसी का यह प्रभाव है।

यह सुनकर रानी का दिल बदल गया। रानी बोली-'स्वामिन्! मैं बहुमूल्य वस्त्राभूषण नहीं पहनूँगी। जिस प्रकार अब तक नियम से रहती आयी हूँ, वैसे ही रहूँगी, कुछ भी परिवर्तन नहीं करूँगी। धनी व्यवसायियों की स्त्रियों के कुसंग से मेरी बुद्धि त्याग-वैराग्य और धर्म से विचलित हो गयी थी, किंतु अब उनके संग का मुझ पर कोई असर नहीं रह गया है। मैंने आपसे जो कुछ दुराग्रह किया, उसके लिये मैं क्षमा-प्रार्थना करती हूँ। मेरे अपराध को आप क्षमा करें और इस स्वर्ण को वापस लौटा दें।'

राजा ने उसकी बात मानकर मन्त्री से कहा कि 'मन्त्री! इस पर जो कुसंगत का असर पड़ा था, वह ईश्वर की कृपा से दूर हो गया है। अब इस धन को जहाँ से तुम लाये थे, वहीं वापस कर दो।' राजा की आज्ञा होते ही मन्त्री वह स्वर्ण लेकर लंकापति रावण के पास पुनः गया और सभा में जाकर बोला-'महाराज चक्ववेण ने आपका यह स्वर्ण वापस लौटा दिया है।'

इस बात को सुनकर रावण के हृदय पर चक्ववेण के त्याग का और भी अधिक असर पड़ा। उसने वह स्वर्ण रखाकर मन्त्री को बहुत ही आदर सत्कारपूर्वक विदा किया। मन्त्री ने वापस आकर राजा-रानी को स्वर्ण लौटा देने का सब हाल सुना दिया। दूत की बात सुनकर राजा-रानी को बहुत ही प्रसन्नता हुई। राजा चक्ववेण का प्रभाव यक्ष, राक्षस, देवता, मनुष्य, ऋषि, मुनि, पशु, पक्षी आदि सभी पर था।

इस कहानी से हम लोगों को यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये-प्रत्येक स्त्री-पुरुष को निष्कामभाव से अपने-अपने वर्णाश्रम-धर्म के अनुसार न्याय और सत्यतापूर्वक अपनी जीविका चलानी चाहिये। दूसरों के आश्रित होकर अपना जीवन-निर्वाह करना भी अपने लिये घृणास्पद है। झूठ, कपट, बेईमानी करके उपार्जित द्रव्य से हमें यदि मेवा-मिष्ठान भी मिल जाए तो वे हमारे लिये विष के समान हैं, किंतु अपने न्यायोपार्जित पवित्र द्रव्य से एक मुट्ठी चने भी खाने को मिलें तो वे हमारे लिये अमृत के समान हैं। हमें बीमारी और आपत्तिकाल के अतिरिक्त -नौकर -चाकर, स्त्री-पुत्र आदि के रहते हुए भी अपने शरीर का काम जहाँ तक हो सके, स्वयं ही करने का अभ्यास डालना चाहिये, जिससे कि हमें दूसरों के अधीन होकर जीना न पड़े।

कल्याणकामी पुरुषों के लिये दूसरों के आश्रित होकर जीना लज्जास्पद है। साथ ही हमें समय को अमूल्य समझकर एक क्षण भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहिये। हर समय भगवान् को याद रखते हुए परोपकार और शरीर निर्वाह आदि का कार्य करते रहना चाहिये। अतः क्षणमात्र भी निकम्मा नहीं रहना चाहिये। थोड़ी देर का कुसंग भी मनुष्य के लिये बहुत हानिकारक हो जाता है-

समर्थ सद्गुरुदेव का पावन मिशन भी राजा चक्कवेण के सत्य की तरह है। आदिगुरु श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी के परम आदेश से सूर्यनगरी जोधपुर से सवितादेव का आलोक फैलाने का कार्य प्रारम्भ किया। समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग ने अपने जीवनकाल में संपूर्ण मानव जाति को वैदिक दर्शन के दिव्य ज्ञान से रूबरू कराया। गुरुदेव की आज्ञा ही सर्वोपरि है।

जो साधक गुरुदेव द्वारा बताई आराधना करते हुए, इस मिशन का प्रचार-प्रसार करना चाहते हैं, गुरुदेव द्वारा बनाई व्यवस्था और सिद्धांतों का पालन करते हुए ही कार्य करें, कल्याण उसी में है। जब आप उनकी आज्ञा का पालन नहीं करोगे तो आप चाहे लोक दिखावे में कितना ही अच्छा कार्य कर रहे हो, सार्थक नहीं होगा, इतिहास इसका साक्षी है।

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

कठिनाई में...

योग के आधार

-महर्षि श्री अरविन्द

यदि तुम उसे सदा पकड़े रखोगे, अथवा, कभी-कभी तुम्हारा हाथ ढीला होने पर भी यदि तुम उसे फिर से पकड़ लिया करोगे तो सारी कठिनाइयों, बाधाओं और पदस्खलनों के होते हुए भी अंत में वह सत्य सिद्ध होकर ही रहेगा। तुम्हारी आध्यात्मिक प्रकृति के क्रम-विकास के साथ-साथ यथा समय तुम्हारी सारी बाधाएँ दूर हो जायेंगी। आवश्यकता बस इस बात की है कि तुम्हारे प्राणमय भाग का स्वभाव बदल जाये और वह समर्पण कर दे। उसे यह अवश्य ही सीखना होगा कि वह एकमात्र सर्वोच्च सत्य को ही पाने की आकांक्षा करे और अपनी निम्नतर प्रेरणाओं और वासनाओं की तृप्ति के लिये आग्रह करना छोड़ दे।

हमारे प्राणमय पुरुष का यह सहयोग ही वह चीज है जो आध्यात्मिक जीवन में हमारी समस्त प्रकृति को पूर्ण तुष्टि और आनंद प्रदान करती है। जब यह हो जायेगा (अर्थात् जब प्राणमय पुरुष सहयोग देने लगेगा) तब साधारण जीवन में लौट जाने का विचार करना भी असंभव हो जायेगा। परंतु जब तक ऐसा नहीं होता तब तक तुम्हें अपने मन के संकल्प और हृत्पुरुष की अभीप्सा को अपना आधार बनाना होगा, उन्हें ही पकड़े रहना होगा, और अगर तुम बराबर आग्रह करते रहोगे तो अंत में तुम्हारा प्राण हार मान लेगा, उसका स्वभाव बदल जायेगा और वह समर्पण कर देगा। तुम अपने मन और हृदय में इस संकल्प को दृढ़तापूर्वक बैठा दो कि तुम्हें भागवत सत्य के लिये, एकमात्र

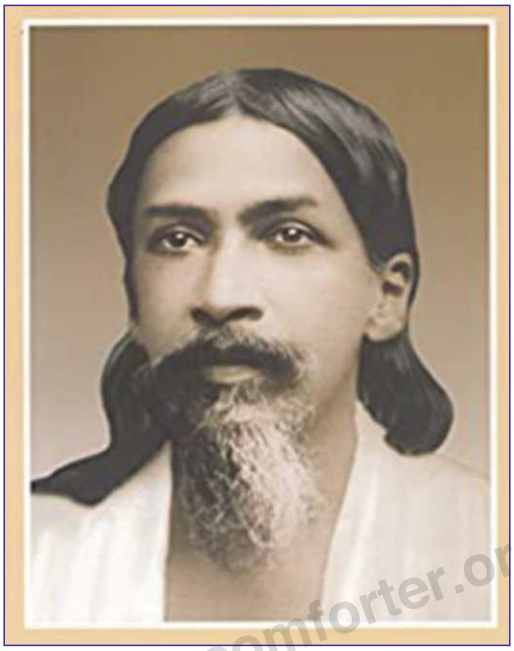

भागवत सत्य के लिये ही जीना है। इसके विपरीत या इससे न मिलने-जुलनेवाली जितनी बातें हैं उन सबका त्याग करो और निम्नतर वासनाओं से मुँह मोड़ लो। यह अभीप्सा रखो कि अन्य किसी शक्ति की ओर नहीं, बल्कि एकमात्र भागवत शक्ति की ओर तुम्हारा उद्घाटन हो। बस पूरी सच्चाई के साथ इसे करो और तुम्हें जिस तात्कालिक और जीती-जागती सहायता की आवश्यकता है उससे तुम वंचित नहीं रहोगे।

तुमने जो भाव ग्रहण किया है वही उचित भाव है। यही अनुभव और भाव तुम्हें इतनी तेजी के साथ उन आक्रमणों पर विजय प्राप्त करने में सहायता करते हैं जो कभी-कभी तुम्हारे ऊपर आते हैं और तुम्हें यथार्थ चेतना से दूर फेंक देते हैं। तुम्हारा कहना ठीक ही है कि कठिनाइयों को इस प्रकार ग्रहण करने से वे सुअवसर में परिणत हो जाती हैं, जब कोई उचित भाव के साथ कठिनाई का सामना करता है और उसे जीत लेता है तब वह देखता है कि उसकी एक बाधा दूर हो गयी है, वह एक कदम आगे बढ़ गया है।

अगर कोई ऐसे अवसर पर प्रश्न उठाये, उसकी सत्ता का कोई भाग विरोध करे तो उससे कठिनाइयाँ और दुःख कष्ट बढ़ जाते हैं -यही कारण है कि भारत के प्राचीन सभी योगमार्गों में यह व्यवस्था दी गयी थी कि 'गुरु' के आदेशों को बिना ना-नुकुर के स्वीकार करना तथा उनका पालन करने में तनिक भी चूक न करना अनिवार्य है। वास्तव में यह व्यवस्था गुरु के हित की दृष्टि से नहीं, बल्कि शिष्य के हित की दृष्टि से की गयी थी।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला सहस्रार में स्थित है और उसकी शक्ति मूलाधार में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है।

उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके चेतन होकर उर्ध्वगमन करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही 'मोक्ष' है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक मृगमरीचिका ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है, उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण प्रभुत्व होता है, इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित परमसत्ता की पराशक्ति है अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित उस परम तत्त्व की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह सार्वभौम सत्ता है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को अभूतपूर्व एवं अद्वितीय देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस दिव्य ज्ञान का महाप्रसाद बाँटने, विश्व में अकेले ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो उर्ध्वगमन करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो स्वयं करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् परशिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों- आधि दैहिक, आधि भौतिक व आधि दैविक (Physical, Mental & Spiritual) का शमन (नाश) करता है। इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व विज्ञान सम्बधित समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो। अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है, जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।

सिद्धयोग से लाभ-

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

. सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, भय, चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।

. सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।

. विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।

. आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।

. गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

. ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार संभव।

www.the-comforter.org

मंत्र

''मंत्र विद्या का पतन नकली गुरुओं के कारण हुआ। बिना गुरु दीक्षा के कोई मंत्र सिद्ध हो ही नहीं सकता। मेरे माध्यम से जो परिवर्तन मानवता में आ रहा है, वह मात्र मंत्र शक्ति का ही प्रभाव है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति के ही सिद्धांत को मैं पूर्ण सत्य प्रमाणित कर रहा हूँ।'' –समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है ?

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें।

शक्तिपात-दीक्षा

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें साधक को सघन मंत्र जाप व ध्यान करना होता है।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामालाल जी सियाग एक सिद्धगुरु हैं जो शक्तिपात दीक्षा से, अपनी दिव्य शक्ति को संजीवनी मंत्र द्वारा शिष्य में संप्रेषित कर, उसकी सुप्तुप्त शक्ति, कुण्डलिनी को जाग्रत कर देते हैं।

गुरुदेव सियाग का संजीवनी मंत्र, एक चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।

गुरुदेव की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें - 07533006009

(सभी जाति एवं धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को सस्नेह निमंत्रण)

www.the-comforter.org

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से, खुली आँखों से देखें।
- फिर गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें।
- अब आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं) केन्द्रित करते हुए, संजीवनी मंत्र का मानसिक जाप (बिना होंठ-जीभ हिलाए) करते रहें।
- इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान की अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी।
- इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।
- नाम जप ही ध्यान की चाबी है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय जपें।

Method of Meditation

- Sit in a comfortable position and look at Gurudev's image for a while.
- Then pray to Gurudev to help you meditate for 15 minutes.
- Now close your eyes and while focussing on Gurudev's image at the centre of your forehead, mentally chant (without moving your lips and tongue) the Sanjeevani Mantra given by Gurudev.
- During this time if you undergo automatic yogic movements, then let them happen. Don't try to stop them. After requested time is over, they will stop.
- Meditate in this way for 15 minutes, in the morning and evening, on an empty stomach.
- For profound meditation, chant the mantra as much as possible while performing your daily activities.

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342001 सम्पर्क : +91-2912753699, +91-9784742595

Email: avsk@the-comforter.org, Website: www.the-comforter.org

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365*POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2020 & VALID UP TO 31.12.2022
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

सिद्धयोग की देन शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जनित यौगिक क्रियाओं की विभिन्न मुद्राओं में साधक

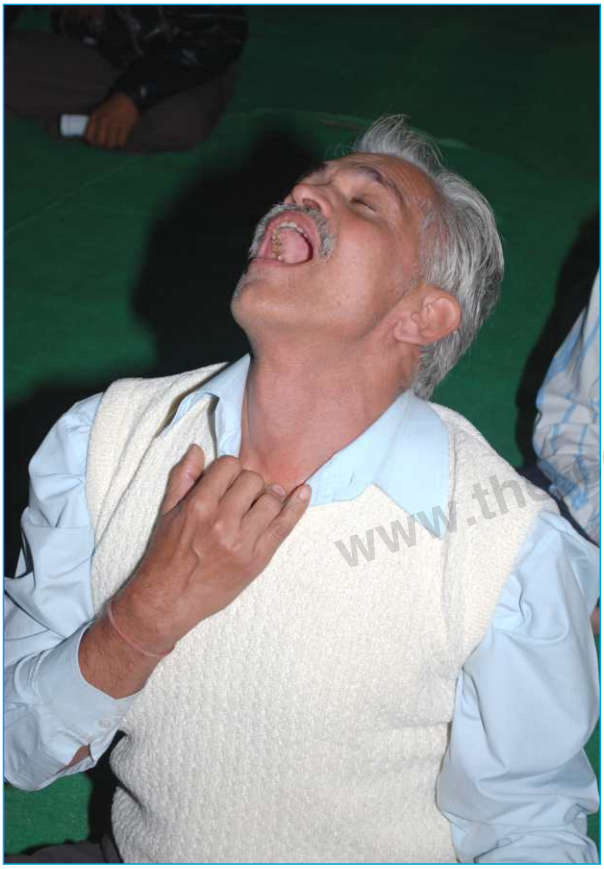

www.the-comforter.org

—— अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें ——
Spiritual Science . स्पिरिचुअल साइंस
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी पोस्ट बॉक्स नं. 41, जोधपुर (राज.) 342001
फोन: + 91 291 2753699, मो. : +91 9784742595 वेबसाइट: www.the-comforter.org

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्_____

स्वत्वाधिकारी: अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए, अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित।